'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १३२ | वाराणसी, मंगलवार, १७ नवम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

रामबन (जम्मू-कश्मीर) २७-८-'५९

खालिस खिदमत करने का काम बहनें ही कर सकती हैं

आज एक सियासी पार्टी के भाई आये थे। वे यहाँके गरीबों के बारे में मुझे बतला रहे थे कि उन्हें क्या तकलीफ है। मैंने सब सुन लिया। बाद में पूछा कि आखिर इसका इलाज क्या है? वे बोले : "बड़े लोगों के पास हमारी यह हालत पहुँचा दीजिये। उन्हें हमारी सारी हालत बता दीजिये।" मैंने पूछा : "बड़े लोग याने कौन?" वे बोले : "सरकार!" यह सुनकर मुझे बहुत दया आयी। मैं सोचने लगा, ऊपर सरकार में काम करनेवालों के पास इस बात को पहुँचाना क्या यही एक इलाज है?

इलाज : हमारे ही हाथ में

सोचने की बात है कि आखिर सरकार को किसने चुना? आपने। सरकार आपकी खिदमत के लिए है, आपकी नौकर है। इसलिए यह काम सरकार का याने नौकर का नहीं, बल्कि आपका याने कारकुनों का है। ऐसे कारकुन सियासी पार्टीवाले नहीं होने चाहिए। सियासी पार्टीवाले कारकुनों पर आज लोगों का भरोसा नहीं रह गया है। उन्हें यह निश्चय हो गया है कि सियासी पार्टीवाले कारकुन कुछ भी नहीं कर सकते। इसलिए हमें समझना चाहिए कि लोगों के दुःख दूर करने का इलाज हमारे ही हाथ में है। सरकार और सियासी पार्टीवाले कारकुनों के हाथ में नहीं है।

खास कर बहनों को जाहिरा तौर पर कह देना चाहिए कि हम सियासी पार्टी में न रहेंगी। हम उनकी सेवा में, खिदमत में रहेंगी, जो बेचारे गरीब हैं, लाचार हैं, जिनकी कोई पूछ नहीं है। उन्हें इस तरह का फैसला कर ही लेना चाहिए। वे आस-पास के गाँवों में दुःखियों की देखभाल करें और लोगों को उनकी ताकत का एहसास करायें।

अपनी-अपनी नहीं, सबकी सोचें

इसी तरह शहरों की गली-गली में रहनेवाले दुःखियों को दिलासा देने का काम भी बहनों को करना चाहिए। उन्हें समझाना चाहिए कि जब तक तुम जाती मिल्कियत, अलग-अलग मिल्कियत रखोगे, अपना-अपना ही दुःख रोओगे, तब तक तुम्हारा दुःख मिटनेवाला नहीं है। हर शख्स केवल अपनी ही फिक्र करेगा तो कुल समाज सुखी नहीं हो सकेगा। जिस समाज में हर व्यक्ति एक-दूसरे की फिक्र करेंगे, एक-दूसरे से हमदर्दी रखेंगे, उसी समाज की तरक्की होगी।

इस तरह का काम करनेवाली गैरजानिबदार स्त्रियाँ शांति-सैनिक के तौर पर सामने आनी चाहिए। ऐसी स्त्रियाँ घर-घर जाकर चरखा चलाना सिखायें, बीमार, दुःखियों की सेवा करें, गरीबों के दुःख को सरकार के पास पहुँचाने का काम करें तो काम बड़ी आसानी से हो जायगा। बहनों का दिल संगदिल, तंगदिल नहीं होता। उनका दिल मुलायम होता है। इसलिए वे वख्त निकालकर बन सके, उतनी सेवा करें और लोगों की ताकत का उन्हें एहसास करायें। इतना करने पर भी अगर दुःख बच जाय तो वह सरकार के पास पहुँचाने में कोई हर्ज नहीं है।

खालिस सेवा करें

मैं यह सब केवल इसलिए कह रहा हूँ कि सेवा खालिस हो। आजकल कोई भी चीज खालिस नहीं मिलती। और तो क्या, खालिस घी भी नहीं मिलता। 'हमारी पार्टी को चुनोगे तो हम सेवा करेंगे' इस खयाल से जो सेवा होगी, वह खालिस सेवा नहीं है। उसमें तो विष मिला है, ऐसा कहना चाहिए। इसी तरह अन्य किसी भी मकसद को सामने रखकर जो सेवा होगी, वह न तो खालिस होगी, न वह भगवान के पास ही पहुँचेगी। इसलिए स्त्रियाँ इस काम को उठा लें। ऐसा होगा, तभी खालिस सेवा हुई, ऐसा माना जायगा। गांधीजी की इच्छा थी कि लोक-सेवक-संघ बने। मैं चाहता हूँ कि इस काम को स्त्रियाँ ही करें। बहनें यह काम करेंगी तो देश की सूरत देखते ही देखते पलट जायगी। इसी तरह की सेवा की इन दिनों सख्त जरूरत है।

अभी सैलाब आया था। ऐसे मुसीबत के समय लोगों को एक होकर रहना चाहिए। अगर वे ऐसा करते हैं तो उन्हें बाहर से उस मदद को हासिल करना आसान हो जाता है, जिसकी उन्हें इस समय सख्त जरूरत है।

लोगों को पहाड़ों में खेती करते हमने देखा है। वे बड़े मेहनती होते हैं, बहुत परिश्रम करते हैं। वे अज्ञानी होते हैं, लेकिन सारी की सारी बातें बड़े ही ध्यान से सुनते हैं और उन्हें

www.vinoba.in

समझने की पूरी कोशिश करते हैं और समझ भी लेते हैं। ऐसे-ऐसे अच्छे लोग देहात में पड़े हैं। अगर देहात के लोग इतने समझदार हो सकते हैं तो आप तो शहर की बहनें हैं, आपके पास काफी वक्त भी है, इसलिए आप इस काम को जरूर उठा लें।

जिस काम के लिए मैं घूम रहा हूँ, वह आप जानते ही हैं। मैं चाहता हूँ कि जमीन की शख्सी, व्यक्तिगत मिलकियत मिटे। मुख्तलिफ और शख्सी मिल्कियत रहने से देहात के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। आज गाँवों के लिए जमीन ही एकमात्र सहारा है। जमीन के सिवा दूसरा आसरा, चारा, पन्हा नहीं है। मिल्कियत अलग-अलग रहने से गाँव के टुकड़े हो जायँगे। गाँव की ताकत कभी नहीं बनेगी।

भाई जलील बन गये

भाइयों के ध्यान में भी यह बात आयी है कि सियासी पार्टी में रहकर कुछ काम नहीं बनेगा। मसले सियासत से नहीं, रूहानियत से हल होंगे। 'नफ़्सुल मुनमईन' हो जायँगे। ऐसे नफ़्स् उन लोगों की सेवा करेंगे, खालिस खिदमत करेंगे, जिनके दिल में पूरी तसल्ली है, जिनके दिल में किसी तरह का रंज नहीं है, दुःख नहीं है। खालिस सेवा—याने खिदमत से फायदा उठाने की नीयत न रखना। इस तरह से खालिस खिदमत की जायगी तो हरएक के अंतर से यह आवाज निकलेगी 'शाबास!' ये सब बातें हमारे भाई लोग समझे तो हैं, परन्तु वे इतने जलील बने हैं कि सियासत के सिवा दूसरी बातें उनके दिमाग में आती ही नहीं। इसीलिए मैं कहता हूँ कि यह काम उनका किया न होगा। इसे बहनें ही उठा लें।

भाइयों से हमारा कहना यह है कि तुम्हारी ताकत बहुत है, लेकिन तुम आपस में टकराते हो, मुख्तलिफ पार्टियों में तुम्हारे दिमाग उलझे रहते हैं। इसलिए तुमसे यह काम नहीं बन पाता, तुम्हारी ताकत खत्म हो जाती है। खैर! हम बहनों को आवाहित करते हैं कि तुम सामने आ जाओ। भाई लोग भी बाबा का कहना मानकर देखें उन्हें एहसास होगा कि उनके हाथों से ज्यादा सेवा हो सकती है। इसलिए औवल बात तो यह है कि भाई-बहनें दोनों सेवा के मैदान में आ जायँ, इससे उनके दिल को सुकून होगा, शान्ति होगी। ●●●

वचन

थाना की मंडी (जम्मू) २५-६-'५९

राष्ट्र-निर्माण हिंसा से नहीं, सहयोग से होगा

यहाँ जमीन की बहुत माँग है। हमारे पास बेजमीनों की ओर से अर्जियाँ आयी हैं। अर्जी देनेवालों को जमीन की जरूरत है। लेकिन उनसे भी ज्यादा जरूरत उनको है, जो लिखना नहीं जानते और यह भी नहीं जानते कि जमीन की माँग कैसे की जाती है। वे बेचारे तो कहीं कोने में होंगे। उन्हें तो ढूँढ़ना होगा। खैर, जिनकी अर्जियाँ आयी हैं और जिनकी नहीं भी आयी हैं, उन सबको हम जमीन देना चाहते हैं।

अमन तब कायम होगा

आज बेजमीनों की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। उन्हें कोई मदद नहीं दे रहा है। इस हालत में कायम के लिए अमन नहीं रह सकता। एक तो बेजमीनों की ओर ध्यान न देने से अमन नहीं रहता। दूसरे में परमात्मा राजी न हो, तब भी अमन नहीं रहता। दोनों एक ही चीज है। एक अन्दर की चीज है तो दूसरी बाहर की। इसलिए हमारे हर काम में परमेश्वर की रजामन्दी होनी चाहिए। हम उस ओर ध्यान नहीं देते, इसीलिए गलतियाँ होती हैं। कुरान-शरीफ में कहा है कि नदी के बहाव के खिलाफ जो जायगा, उसका बदतर हाल होगा और जो अल्लाह की मर्जी के खिलाफ जायगा, उसका भी बदतर हाल होगा। इसलिए बहाव किधर जा रहा है, यह आप पहचान लीजिये।

हम लोगों के सामने बेजमीनों की, गरीबों की माँग रखने के लिए घूम रहे हैं। हम चाहते हैं कि लोगों के दिल खुल जायँ और हम वहाँ पैठें। उसमें गरीबों के लिए भी जगह हो। बेजमीनों को जमीन मिलनी ही चाहिए। जमीन भगवान की चीज है। वह सबके लिए है। जब वह सबको मिलेगी और शख्सी मालकियत मिटेगी, तभी दुनिया में अमन कायम रहेगा, नहीं तो कशमकश जारी ही रहेगी।

www.vinoba.in

हिंसा का भयंकर रूप

आज यहाँ के कारीगर मिलने आये थे। वे लकड़ी का काम करते हैं। उनके हाथ में बहुत अच्छी कारीगरी है। जब यहाँ पाकिस्तान की ओर से हमला हुआ और बाद में हिन्दुस्तान की सेना आयी, तब उन्हें दोनों तरफ से कष्ट सहना पड़ा। हमलावर तो तंग करना चाहते ही हैं, परन्तु बचानेवाले, जो कि मदद करना चाहते हैं, वे भी तबाह करते हैं! आखिर कोरिया में भी यही न हुआ? उसे बचानेवाले और हमलावर, दोनों ने मिलकर तबाह किया। उसके दो टुकड़े हो गये। इसीलिए हमारा कहना है कि तशद्दुद से, हिंसा से मसले हल होनेवाले नहीं हैं। पुराने जमाने में मनुष्य के पास आज जैसे खौफनाक हथियार नहीं थे इसलिए हिंसा में रक्षण की शक्ति थी। एक हमला करता था, तो दूसरा हिंसा से बचाव भी कर लेता था। वह हिंसा लड़नेवालों तक ही सीमित रहती थी। लेकिन आज वह लड़नेवालों तक सीमित नहीं है। इस समय ऊपर से बम गिरता है तो मवेशी खत्म होते हैं, पेड़ टूटते हैं, मकान गिरते हैं, अनगिनत बेगुनाह आदमी लूले-लंगड़े होते और मरते हैं। दस साल पहले जापान में हीरोशिमा पर ऐटमबम गिरा था। तब वह पूरा शहर तबाह हो गया था। लाखों लोग जख्मी हुए। आज तो उस बम से दस गुना अधिक ताकतवाले बम बन गये हैं। रूस और अमेरिका के पास ऐसे बम के ढेर हैं। इंग्लैंड भी ऐसे बम बनाने की कोशिश कर रहा है। इस हालत में अब हिंसा से मसले हल करने की कोशिश की जायगी तो जिसे 'गुन्हा बेलज्जत' कहते हैं, वैसा होगा। याने वह बेवकूफी ही मानी जायगी।

यह ठीक है कि बाप बच्चे को तमाचा मारता है और काम करवा लेता है, लेकिन उसके आगे-पीछे, ऊपर-नीचे प्यार रहता है और बीच में तमाचा। इसलिए बच्चा बाप की इज्जत करता है। पर यह बात खूब अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि

पीटने से बच्चा डरपोक बनता है। बच्चा स्कूल में ठीक वख्त पर नहीं जाता, इसलिए उसे पीटा। पीटने से वह ठीक समय पर स्कूल जाने लग गया। वह वख्त का पाबंद हो गया, लेकिन उसके साथ-साथ डरपोक भी बन गया। पीटने से उसे यह तालीम मिलती है कि मारनेवाले, जुल्म करनेवाले से डरो। पीटने से जुल्मी के, जालिम के कब्जे में जाने की बात बच्चे सीख लेते हैं। इससे फल क्या निकला? दो पैसे कमाये और दो रुपये गँवाये। वख्त पर स्कूल जाने के हिसाब से इतनी बुराइयाँ आ गयीं। बच्चे को पीटने के पीछे प्यार है, इसलिए कुछ अच्छाई निकल जाय तो अलग बात है, लेकिन कोई देश का बैनुल अकवामी मसला तशद्दुद से हल करने जाय तो अब वह मूर्खता ही होगी।

आज फौज पर हिन्दुस्तान तीन सौ करोड़ रुपया खर्च कर रहा है और पाकिस्तान सौ करोड़ रुपया। दोनों भाई-भाई हैं। लेकिन दोनों ही डर के कारण इतना खर्च कर रहे हैं। अगर यही खर्च अवाम की भलाई के लिए किया जाय तो कुल गरीबों को, बेजमीनों को इमदाद मिल सकती है। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ कि यहाँके कारीगरों को तकलीफ है। वे तंग हो रहे हैं। उन्हें जमीन चाहिए। हम चाहते हैं कि उन्हें जमीन दें और जितने भी माँगनेवाले हैं, उन सबको जमीन दें। पर जमीन हमारे पास तो है नहीं। हम तो इधर से लेते हैं और उधर दे देते हैं। यहाँ भी जितने माँगनेवाले हैं, उतने देनेवाले होने चाहिए। यहाँके बेजमीनों की माँग वाजिब है। उसके पीछे हक है। भगवान ने जमीन सबके लिए पैदा की है। उसपर सबका समान हक है।

दो महीने बाद तो लाशें ही मिलेंगी

आज हमें लोगों ने बताया कि यहाँ सड़क, रास्ता वगैरह बनाया गया। उसमें मजदूरों ने काम किया। पर अभी तक उन मजदूरों को मजदूरी नहीं मिली है। काम करवानेवाले कहते हैं कि यह बात मुश्तकबील है। उन्हें मजदूरी भविष्य में मिलेगी। हमें यह सुनकर बहुत दुःख हुआ। मजदूरों के घर में अनाज या पैसों का ढेर तो है नहीं, जो वे बिना मजदूरी मिले ही अपना काम चला लें। मजदूरों को इस तरह परेशान क्यों किया जाता है? हमारे दिल में हमदर्दी नहीं है—ऐसा नहीं। लेकिन हमें मजदूरों की हालत के बारे में खयाल नहीं है, इसीलिए ऐसा होता है। वह खयाल हमें तभी होगा, जब हम जान-बूझकर गरीबों की जिंदगी जीयेंगे। एक कहावत है—पानी में मछली कैसे रहती है, इसका पता तभी चलेगा, जब हम मछली का जनम लेंगे। ऐसे ही हमें गरीबों की हालत को समझना होगा यह बात मैं अपने तजुरबे से कह रहा हूँ। मैंने बरसों तक आठ-आठ घंटे रोज मजदूरी की है। मैं मजदूरों की हालत अच्छी तरह जानता हूँ। इसलिए जब मैंने सुना कि इन मजदूरों को दो महीने बाद मजदूरी मिलेगी, तब मेरे मन में सवाल उठा कि तब तक इनका गुजारा कैसे होगा। दो महीनें बाद तो उनकी लाशें बाहर आयेंगी। मजदूरों से काम लेनेवाले लोग जान-बूझकर या बेरहमी से ऐसा करते हैं, सो नहीं, पर ये समझते ही नहीं हैं।

जनता और सरकार का सहयोग

समाज में तरह-तरह के मसले हैं। आखिर इन मसलों को हल कौन करेगा? क्या बक्शी सरकार हल करेगी? वह भी कुछ करेगी, कुछ करती है और उसे करना भी चाहिए। जो वह नहीं करती, उसके लिए माँग पेश करनी चाहिए। ताली हमेशा दो हाथों से बजती है। एक हाथ सरकार है और दूसरा हाथ अवाम। दोनों के मिलने से ही काम होता है। सरकार मंसूबे बनाती है। पहला पंचसाला मंसूबा खत्म हुआ, दूसरा हो रहा है और तीसरे की तैयारी हो रही है। पैसा पानी की मुआफिक बह रहा है। लेकिन पानी पौधों तक नहीं पहुँच रहा है। पानी सूख रहा है और साथ-साथ पौधे भी। हिन्दुस्तान के कम्युनिटी प्रोजेक्ट के मन्त्री हमसे कह रहे थे कि हम इतना पैसा खर्च कर रहे हैं, बावजूद इसके हमारी मदद उन्हींको मिलती है, जो उसे खींच सकते हैं। जो खींच नहीं सकते, उन्हें मदद नहीं मिलती। यह सही बात है। मैं ही आपसे पूछना चाहता हूँ कि आपको जमीन चाहिए और जमीन देने के लिए कोई ऊपर का बड़ा अफसर आकर यहाँ बैठे तो क्या गरीब लोग उसके पास पहुँचने की हिम्मत करेंगे? बाबा चाहता है कि गरीबों को खूब मदद मिले, लेकिन गरीब उसके पास भी नहीं आते। वे छिपे रहते हैं। वैसे लोगों को तो ढूँढ़ने की कोशिश करनी पड़ती है।

आसाम में बाढ़ आयी। लोग तबाह हो गये। तब वहाँ एक गुजरात के दौलतमन्द भाई मदद देने के लिए गये थे। वे लौटकर आते समय वर्धा उतरे। मैंने उनसे पूछा कि इस तरह मदद देनेवालों में क्या लियाकत होनी चाहिए? उन्होंने कहा कि मदद के लिए जानेवालों को निष्ठुर होना चाहिए। उनका जवाब सुनकर मैं हैरान हो गया! वे कहने लगे कि सभी लोग दुःख में तो होते ही हैं। इसलिए नरम दिल रहा तो जो सबसे पहले आयेगा, उसे तो खूब मदद दे दी जायगी और जो सचमुच दुःखी होगा और पीछे रह जायगा, उसे मदद मिल ही नहीं सकेगी। इसलिए मदद देनेवाले का दिल फौरन पिघलना नहीं चाहिए। असली जरूरतमन्द लोगों को ढूँढ़ना चाहिए।

सरकार भी आपको मदद करना चाहती है, पर होती नहीं है। सरकार तो लाख मदद करेगी, लेकिन हमारा समाज भी ऐसा होना चाहिए, जिसमें सभी एक-दूसरे की मदद के लिए दौड़े आयें। हम आपस में मदद नहीं करेंगे तो केवल सरकार से क्या होगा? कुएँ से नाली निकाली। नाली की सतह खेत से थोड़ी ऊपर है। इसलिए सारा पानी नाली में ही खत्म हो जाता है, खेत में बहुत थोड़ा पहुँचता है। इसी तरह यह सरकारी मदद २५ प्रतिशत लोगों के पास पहुँचती है और ७५ प्रतिशत लोग ऐसे ही रह जाते हैं। अगर १०० में से १०० को मदद पहुँचानी है तो दोनों हाथ से काम करना चाहिए। एक हाथ है सरकार का और दूसरा है अवाम का। कौन-सा हाथ जबर होगा? दायाँ। बाँया जेर होगा। जेर और जबर इकट्ठा होंगे, तभी काम होगा।

आजकल लोग समझते हैं कि जलसा करने और चिल्लाने से मदद मिल जायगी। पर यह सोचना एकदम गलत है। मदद प्राप्त करने के लिए तो सबको एक होना पड़ेगा। ● ● ●

जय ग्रामदान-जय जगत

www.vinoba.in

प्रश्नोत्तर

गुलमर्ग (जम्मू-कश्मीर) १६-७-'५९

क्या हमें आज का सेवाकार्य आखिर तक करना चाहिए ?

विनोबाजी : हमारी एक राय है कि इन्सान को एक उम्र के बाद काम छोड़ देना चाहिए और आत्म-चिन्तन में लगना चाहिए। फिर जो भी उसके पास आये, उसे वह सलाह दे सकता है। अगर इन्सान यह न करे तो उसका पूरा विकास नहीं होता। उसे लगता है कि सेवा आखिर तक करनी चाहिए। लेकिन यह लोभ ही है। कितने ही ऐसे मन्त्री हैं, जो अपना स्थान छोड़ते ही नहीं। उससे उनका भी नुकसान होता है और देश का भी। लोग समझते हैं कि इनके बिना हमारा नहीं चलेगा और वे भी समझते हैं कि हमारे बिना देश का नहीं चलेगा। दोनों चीजें गलत हैं। उन्हें चाहिए कि अपना स्थान छोड़कर ऊँचे चिंतन में लगें और जवानों को सलाह दें। अगर वे ऐसा नहीं करते तो नये-नये मनुष्य आगे नहीं आ पाते। फिर उनके मरने के बाद जो आगे आयेंगे, उन्हें कोई अनुभव नहीं रहता है। इसलिए नये जवानों को आगे आने देना चाहिए और सलाह देनी चाहिए, जिससे उनका विकास हो और जवानों का भी।

करमन की गति न्यारी

सूरदास का एक सुन्दर भजन है : 'ऊधो करमन की गति न्यारी।' उसमें कहा है कि भगवान ने आँखवालों को हरिदर्शन की लालसा नहीं दी और अन्धे सूरदासजी दर्शन के लिए तड़पते हैं। आँखवालों को, जो कि बिलकुल खुली आँख से देख सकते हैं, हरिदर्शन की प्यास नहीं होती। वे तो चाहते हैं कि गुलमर्ग जायँ, वहाँके गुल देखें या और कोई भोगविलास करें और अन्धे सूरदास को श्याम भगवान को देखने की प्यास है। "सूर श्याम मिलने की आशा।" क्या कर्म की गति है।

सत्र रखनेवाले सेवा करते हैं

तुलसीदास ने लिखा है कि जैसे एक मनुष्य सावन में अन्धा बना, तब सृष्टि हरी-भरी थी, इसलिए उसे जिन्दगी भर हरा ही हरा सूझता है। वैसे मुझे रामनाम ही सूझता है। "मोहीं तो सावन के अन्धे जो सूझत रंग हरो।" मिल्टन को जब तक आँख थी, तब तक वह राजनीति पर ही लिखता रहा। लेकिन अन्धा होने के बाद उसकी राजनीति खत्म हुई। फिर उसने भगवान का चिन्तन शुरू किया और अपनी कन्या को 'पैराडाइज लास्ट' डिक्टेट कराया। 'पैराडाइज लास्ट' के कारण ही मिल्टन मशहूर है। वह कविता इंग्लैंड की कविता में एवरेस्ट के शिखर के जैसी मानी जाती है। मिल्टन से वह इसीलिए लिखा गया कि वह अन्धा बना। लेकिन जब वह अन्धा बना, तब पहले-पहल उसे लगा कि अब मुझसे क्या सेवा होगी ? क्योंकि वह राजनीति को सेवा समझकर ही उसमें काम करता था। उस समय की उसकी एक कविता है, जिसमें उसने लिखा है कि जब कि उसने मेरा प्रकाश छीन लिया है तो वह मुझसे क्या उस सेवा की अपेक्षा करेगा, जो प्रकाश में की जाती है ? लेकिन वह भी सेवा करते हैं, जो सत्र रखते हैं।

मैं भी मानता हूँ कि मैं कल अन्धा हो जाऊँगा तो आज जितनी सेवा करता हूँ, उससे ज्यादा सेवा करूँगा। सेवा आँख पर निर्भर नहीं है। अन्धे के लिए कश्मीर की सारी खूबसूरती बेकार है। लेकिन उसके लिए भी कोई खूबसूरती है या नहीं ? है, वह तो अन्दर है।

उसीके हुक्म से काम होता है

प्रश्न :—जो टेक्निशियन्स हैं, वे कैसे कन्व्हर्ट होंगे ?

विनोबाजी :—"हुक्म रजाई चल्लणा नानक लिखिया नाली, नानक हुकुमे जे बुझे त हउमे कहे न कोई" खत्म हो गया। उनको क्या कन्व्हर्ट करना है ? वे हैं कौन ? उनकी क्या हस्ती है ? वे तो नाचीज हैं।

अभी हम पहाड़ चढ़कर आये तो क्या अपनी ताकत से आये ? आखिरी दो दिन आसमान साफ रहा, इसीलिए हम यहाँ आ सके। अगर उस वक्त बारिश होती तो हम खत्म हो जाते। गजनी के मुहम्मद ने हिंदुस्तान पर १७ दफा हमला किया था। वह कश्मीर पर हमला करने आया था और लोरेन से उसे वापस जाना पड़ा। उसी लोरेन से मैं पीर चढ़कर यहाँ आया हूँ। जहाँ उसको भागना पड़ा, वहाँ हमें नहीं भागना पड़ा। वह जीतने के लिए आया था और हम भी जीतने के लिए आये हैं। लेकिन उसका जीतने का तरीका दूसरा था और हमारा तरीका दूसरा है। जैसे सिकन्दर पंजाब को जीतने आया था, लेकिन उसे वापस लौटना पड़ा। वह दुनिया को जीतना चाहता था। उस वक्त पटने को जीता—याने हिंदुस्तान को जीता और दुनिया के मालिक बन गये—ऐसा माना जाता था। लेकिन सिकन्दर का यहाँपर पोरस से मुकाबला हुआ। उसने सोचा कि पटने में तो पोरस से भी ताकतवर राजा होंगे। इसलिए उसके मन में अन्दर से हिचक पैदा हुई। फिर भी वह आगे बढ़ा। लेकिन उसकी फौज ने आगे बढ़ने से इन्कार किया। वह जीतने के लिए आया था, लेकिन हारकर चला गया। उसी पंजाब में महाराष्ट्र से एक शख्स नामदेव आया और उसने पंजाब को इस तरह जीता कि किसीको पता भी नहीं चला। नामदेव का दुनिया को जीतने का तरीका ही अलग था। "मन जीते जग जीत" नामदेव के भजन पंजाब के लोकमानस में इतने घुल-मिल गये थे कि गुरुग्रंथ में उसके भजन लेने पड़े, यद्यपि नानक गुरुओं में से नहीं था। जैसे मैं नामदेव विरुद्ध सिकन्दर की बात सुनाता था वैसे अब सुनाऊँगा कि बाबा विरुद्ध गजनी का मुहम्मद। मैंने लोरेन में ईश्वर के खिलाफ सत्याग्रह किया कि अगर मैं पीर न लाँघ सका तो वापस पंजाब चला जाऊँगा। यह सुनते ही ईश्वर घबड़ाया। उसने सोचा कि अगर यह शख्स वापस लौटा तो अपनी फजीहत है। इसलिए उसने हमें आगे बढ़ने दिया। ●

अनुक्रम

१. खालिस खिदमत करने का काम बहनें ही कर सकती हैं
रामबन २७ अगस्त '५९ पृष्ठ ७७५
२. राष्ट्र-निर्माण हिंसा से नहीं, सहयोग से होगा
थाना की मंडी २५ जून '५९ ,, ७७६
३. क्या हमें आज का सेवाकार्य आखिर तक करना चाहिए ?
गुलमर्ग १६ जुलाई '५९ ,, ७७८

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।
www.vinoba.in